पूर्वप्रांकित अन्तर होते हुए भी समाज और राज्य में घनिष्ठ सम्बंध पाया जाता है। दोनों एक-दूसरे पर आश्रित हैं। राजकीय नियमों के द्वारा ही सामाजिक आचरण का नियमन किया जा सकता है और राजकीय नियम सामाजिक रूप से मान्य आचरण पर ही आधारित होते हैं। बार्कर के अनुसार, "समाज और राज्य एक-दूसरे से सम्बद्ध हैं। यदि ऐसा न होता तो राज्य की स्थापना हो ही नहीं सकती थी।"

—— x —— x —— x

(i) निश्चित भू-भाग :-

राज्य के पास निश्चित क्षेत्र का होना अनिवार्य है। हालांकि इलंटशाली एवं विरोधी जैसे विद्वान इसे राज्य के लिए अनिवार्य नहीं मानते, परन्तु इस दृष्टिकोण की मान्यता नहीं है। भू-भाग का मतलब केवल स्थल से नहीं, वरन् इसके अंतर्गत समुद्र जो सामान्यतया तट से 3 या 12 मील का क्षेत्र शामिल हो, अंतरिक्ष एवं वन, पर्वत आदि सभी को भू-भाग ही माना जाता है।

भू-क्षेत्र का आकार कितना हो, यह तय करना मुश्किल है। क्योंकि, एक ओर विश्व में कई ऐसे राज्य हैं, जो आकार में काफी बड़ा है, जैसे - रूस, तो दूसरे ओर वेटिकन जैसे छोटे राज्य भी हैं।

सामान्य मत यह है कि राज्य का आकार ऐसा होना चाहिए, जिससे उसकी समुचित सुरक्षा हो सके और साथ ही उससे उपलब्ध संसाधनों से राज्य के निवासियों का समुचित भरण-पोषण हो सके।

(ii) जनसंख्या :

राज्य की जनसंख्या कितनी होनी चाहिए, यह निश्चित नहीं किया जा सकता है। सामान्यतया जनसंख्या उतनी होनी चाहिए कि राज्य के निवासियों का अच्छे ढंग से भरण-पोषण हो सके।

प्लेटो ने आदर्श राज्य की जनसंख्या 5040 तथा रूसो ने 10,000 निर्धारित किया है। अरस्तू मध्यम मार्ग को अपनाया है; जनसंख्या न तो बहुत अधिक होनी चाहिए न ही बहुत कम होनी चाहिए। इन्होंने जनसंख्या के गुणात्मक पक्ष पर भी जोर दिया है। अरस्तू के अनुसार "अच्छे नागरिक अच्छे राज्य का और बुरे नागरिक बुरे राज्य का निर्माण करते हैं।"

(iii) सरकार :-

यह राज्य का संगठनात्मक तत्व है। राज्य को मूर्तता प्रदान करता है। राज्य के सत्ता का व्यवहारिक क्रियान्वयन इसके द्वारा ही किया जाता है। सरकार के बिना राज्य का अस्तित्व असम्भव है।

गार्नर के अनुसार, "सरकार वह इकाई है जिसके द्वारा सामान्य नीतियों का निर्धारण, सामान्य महत्व के कार्यों का नियमन और सामान्य हितों का समर्थन किया जाता है।"

P.T.O.

B.A.
Degree(H)
Part - I
Date. 28.03.2020

— 1 —

(1

राज्य : परिभाषा और तत्व
STATE : DEFINITION AND ELEMENTS

OM KUMAR SINGH
Assistant Professor,
Deptt. of Political Science
D.B. College, Jaynagar
(LNMU, DARBHANGA)

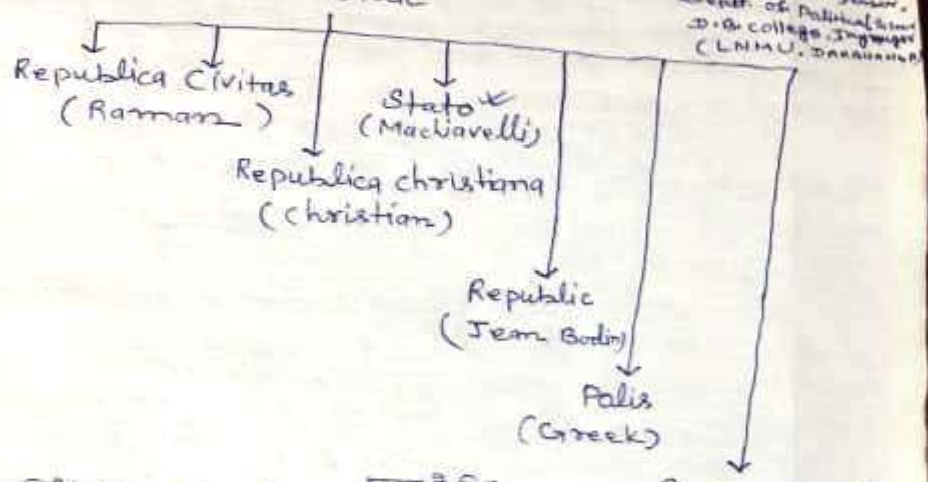

(ख्याति में विभिन्न विचारकों के द्वारा राज्य के लिए प्रयोग किए गए शब्द)

* राज्य राजनीति विज्ञान के अध्ययन का केन्द्रीय विषय है।
* गार्नर के अनुसार,
  "राजनीति विज्ञान के अध्ययन का प्रारंभ और अन्त राज्य से होता है।"
* भिन्न-भिन्न विद्वानों और विचारधाराओं का राज्य के प्रति भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण रहा है। जैसे- यूनानी चिन्तकों ने राज्य को प्राकृतिक समुदाय, सद्गुणी या अच्छा जीवन की प्राप्ति का माध्यम माना है। मार्क्सवादी के अनुसार, "राज्य शोषण का एक यंत्र या इकाई है।" संविदावादियों (हॉब्स, लॉक एवं रूसो) ने राज्य को यंत्र मानते हुए समझौते का परिणाम माना है।
* आधुनिक संदर्भ में राज्य शब्द का प्रयोग सबसे पहले इटली के विचारक मैकियावेली द्वारा अपनी पुस्तक 'The Prince (1513)' में किया गया। इसने इतालवी भाषा में 'Stato' नामक शब्द का प्रयोग किया, जिसका अंग्रेजी 'The State' होता है।
* पारम्परिक दृष्टिकोण के अन्तर्गत राज्य को सामान्यतया सुव्यवस्थित जीवन उपलब्ध कराने वाली इकाई माना गया है।

P.T.O.

Ajanta Officer

B.A. Degree (H) Pol. Sc.
Part-I
Date: 30/03/2020

राज्य और समाज में अन्तर

By OM KUMAR SINGH
Assistant Professor
Deptt. of Political Science
D. B. College, Jaynagar

प्लेटो और अरस्तू के समय में यूनानी नगर राज्य का आकार काफी छोटा था, इस कारण से राज्य और समाज में अन्तर करना बहुत कठिन था। इसी वजह से दोनों विचारक ने राज्य और समाज में अन्तर नहीं माना है। हीगल और काण्ट जैसे आदर्शवादी विचारक एवं हिटलर और मुसोलिनी ने भी राज्य और समाज के मध्य अन्तर को स्वीकार नहीं किया। परन्तु यदि हम लक्ष्य, कार्यक्षेत्र, कालक्रम, उत्पत्ति, क्षेत्र एवं सम्प्रभुता, आदि के परिपेक्ष्य में गौर करेंगे, तो पायेंगे कि दोनों में मौलिक या आधारभूत अन्तर पाया जाता है, जो इस प्रकार है —

समाज	राज्य
(1) समाज का कार्यक्षेत्र राज्य के अपेक्षा विस्तृत है।	(1) इसका कार्यक्षेत्र समाज की तुलना में सीमित है।
(2) इसका सम्बंध मानव जीवन के सभी पहलु से है।	(2) इसका सम्बंध मानव के राजनीतिक पहलु से है।
(3) यह सहयोग पर आधारित है।	(3) राज्य बल-प्रयोग पर आधारित है।
(4) इसके लिए निश्चित प्रदेश आवश्यक नहीं है।	(4) इसके लिए निश्चित प्रदेश आवश्यक है।
(5) इसका लक्ष्य व्यापक होता है।	(5) समाज के अपेक्षा इसका लक्ष्य संकुचित होता है।
(6) कालक्रम की दृष्टि से समाज का जन्म पहले हुआ है।	(6) इसकी उत्पत्ति बाद में हुई है।
(7) यह प्रथाओं द्वारा अपनी इच्छा को व्यक्त करता है।	(7) यह अपनी विधियों के द्वारा इच्छा को व्यक्त करता है।
(8) इसके पास सम्प्रभुता तथा दण्डकारी शक्ति का नितान्त अभाव होता है, यह केवल नैतिक बल से अपने आदेशों का पालन करा सकता है।	(8) इसके पास सम्प्रभुता तथा दण्डकारी शक्ति होती है, जिसके द्वारा ही आदेशों का पालन कराती है।

राज्य की प्रमुख परिभाषाएँ :—

(i) "राज्य परिवारों और ग्रामों का वह समूह है जो आत्मनिर्भर और समृद्ध जीवन जीने के लिए संगठित किया गया है।"
— अरस्तू

(ii) "राज्य परिवारों और उनकी सामान्य सम्पत्तियों का ऐसा समूह है जो सर्वोच्च शक्ति और विवेक द्वारा शासित होता है।"
— बोदाँ

(iii) "राज्य किसी निश्चित प्रदेश के राजनीतिक दृष्टि से संगठित लोग है।"
— ब्लंटशली

(iv) "राज्य एक इकाई है जिसके पास हथकारी शक्ति का एकाधिकार होता है।"
— मैक्स वेबर

(v) "राज्य एक भू-भागीय समाज है जो सरकार और प्रजा में विभाजित है और जो अपने निर्धारित क्षेत्रों के अन्तर्गत सभी संस्थाओं से सर्वोच्च है।"
— लास्की

उपर्युक्त परिभाषाओं का मूल्यांकन किया जाय तो हम पाएंगे कि एक भी परिभाषा परिपूर्ण नहीं है। आधुनिक सन्दर्भ में राज्य की परिभाषा: एक ऐसा राजनीति इकाई, जिसमें निश्चित भू-भाग, जनसंख्या, सरकार एवं सम्प्रभुता सम्मिलित हो, उसे राज्य कहेंगे।

उपर्युक्त परिभाषा से स्पष्ट होता है कि राज्य के चार तत्व होते होते हैं।

(i) निश्चित भू-भाग
(ii) जनसंख्या
(iii) सरकार
(iv) सम्प्रभुता
→ राज्य

Next—

(iv) **सम्प्रभुता** :

यह राज्य का अनिवार्य तत्व है। भू-भाग, जनसंख्या तथा सरकार रहते हुए भी सर्वोच्च शक्ति के बिना राज्य अधूरा है। इस तत्व का निरूपण आधुनिक काल में फ्रांसीसी विचारक ज्यां बोदाँ द्वारा 16वीं शताब्दी में किया गया। बोदाँ के अनुसार "यह वही तत्व है, जो राज्य को डाकुओं के गिरोह से अलग करता है।"

सम्प्रभुता के दो पक्ष होते हैं—

(i) आन्तरिक

(ii) बाह्य

आन्तरिक पक्ष का आशय है कि राज्य के सीमा के अन्तर्गत प्रत्येक व्यक्ति, संघ या समुदाय इसकी आज्ञापालन के लिए बाध्य, जबकि बाह्य का अभिप्राय है राज्य सभी प्रकार के बाह्य नियंत्रण से मुक्त अर्थात् दूसरा राज्य इसके शासन, प्रशासन, नीति-नियम में हस्तक्षेप नहीं कर सकता है।

× —— × —— × —— × —— × —— ×

OM KUMAR SINGH
Assistant Professor
Deptt. of Political Science
D.B. College Jaynagar
Email: kumarom569@gmail.com
Mobile: 7091228639

31/03/2020

BA Degree(H) Pol.Sc
Part-I
[redacted]
Date. 31/03/2020

राज्य और सरकार में अन्तर

By. OM KUMAR SINGH
Assistant Professor,
Deptt. of Political Science
D.B. College Jaynagar

कुछ निरंकुश शासकों के द्वारा राज्य और सरकार में कोई अन्तर नहीं माना गया है। फ्रांस के सम्राट लुई चौदहवें का कथन 'मैं ही राज्य हूँ' तथा हॉब्स द्वारा राज्य और सरकार का एक ही अर्थ में प्रयोग किया जाना उचित प्रतीत नहीं होता, क्योंकि राज्य राजनीतिक प्रणाली के अनुसार संगठित एक पूर्ण समुदाय होता है, जबकि सरकार उन उद्देश्यों या लक्ष्यों की प्राप्ति का साधन मात्र है। दोनों में प्रमुख अन्तर इस प्रकार है—

राज्य	सरकार
(1) राज्य एक अमूर्त विचार या अवधारणा है।	(1) यह मूर्त अथवा ठोस यंत्र है। व्यावहारिक रूप है।
(2) तुलनात्मक दृष्टि से राज्य, सरकार के अपेक्षा अधिक स्थायी होता है।	(2) यह अस्थाई होता है। ये बदलती रहती है।
(3) राज्य की शक्ति प्रारंभिक और मौलिक होती है।	(3) इसकी शक्ति प्रदत्त होती है
(4) यह जनसंख्या, भू-भाग, सरकार और सम्प्रभुता से मिलकर बनता है।	(4) राज्य के बिना इसका अस्तित्व नहीं है। यह राज्य का ही एक अंग होता है।

[redacted]
Next

अथवा:

राज्य	सरकार
(5) यह एक बृहत इकाई है। सभी नागरिक इसके सदस्य होते हैं।	(5) यह एक छोटी इकाई है। इसके सदस्यों की संख्या कम होती है, जो व्यवस्थापिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका का निर्माण करते हैं।
(6) राज्य प्राकृतिक है। विकास की प्रक्रिया द्वारा राज्य का निर्माण हुआ।	(6) यह कृत्रिम है। मनुष्य के सजग प्रयास से इसका निर्माण हुआ है।
(7) इसके लिए क्षेत्र का होना नितान्त आवश्यक है	(7) इसके लिए क्षेत्र का होना जरूरी नहीं है।
(8) राज्य के प्रकार नहीं होते अर्थात इसका रूप सामान्यतः एक ही रहता है। जिसके चार तत्व- भू-भाग, जनसंख्या, सत्ता और सम्प्रभुता होते हैं।	(8) यह अनेक प्रकार के होते हैं जैसे - अधिनायकवाद अथवा जनतंत्रात्मक, एकात्मक अथवा संघात्मक, संसदात्मक अथवा अध्यक्षात्मक आदि।

उल्लेखित अन्तर होते हुए भी राज्य और सरकार एक-दूसरे के काफी निकट है। एक के बिना दूसरे का अस्तित्व निरर्थक है।

OM KUMAR SINGH
Assistant Professor,
Deptt. of Political Science
Email: kumaromsss@gmail.com
Mobile No. 7091228639